भारतीय परम्परा

Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

वर्ष -2/अंक -13/ जुलाई-2022

श्रावण भक्ति

www.bhartiyaparampara.com

भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

वर्ष-2 /अंक-13 / जुलाई -2022

संपादक
प्रीति माहेश्वरी

प्रकाशन स्थल
मुम्बई

डिजाइनिंग टीम
MX CREATIVITY

For Private Circulation Only

सोशल कनेक्शन

हमसे जुडने के लिए आइकन पर स्पर्श करें

www.bhartiyaparampara.com

paramparabhartiya@gmail.com

मूल्य

आपका कीमती समय

जुलाई माह

साका कैलेण्डर - 1944 | विक्रम संवत - 2079 | अयान - उतरायन | ऋतु - वर्षा

सोम		04 आषाढ़ शु. पंचमी	11 आषाढ़ शु. द्वादशी, प्रदोष व्रत	18 श्रावण कृ. पंचमी, श्रावण सोमवार व्रत	25 श्रावण कृ. द्वादशी, प्रदोष व्रत
मंगल		05 आषाढ़ शु. षष्ठी, स्कंध षष्ठी	12 आषाढ़ शु. त्रयोदशी	19 श्रावण कृ. षष्ठी	26 श्रावण कृ. त्रयोदशी, मासिक शिवरात्री
बुध		06 आषाढ़ शु. सप्तमी, विवस्पान सप्तमी	13 आषाढ़ शु. पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा व्रत	20 श्रावण कृ. सप्तमी	27 श्रावण कृ. चतुर्दशी
गुरू		07 आषाढ़ शु. अष्टमी, दुर्गाष्टमी	14 श्रावण कृ. प्रतिपदा, चर्तुमास प्रारंभ	21 श्रावण कृ. अष्टमी	28 श्रावण कृ. अमावस्या, हरियाली अमावस्या
शुक्र	01 आषाढ़ शु. द्वितीया, जगन्नाथ रथ यात्रा	08 आषाढ़ शु. नवमी, भढली नवमी, गुप्त नवरात्र समाप्त	15 श्रावण कृ. द्वितीया	22 श्रावण कृ. नवमी, मासिक कार्तिगाई	29 श्रावण शु. प्रतिपदा
शनि	02 आषाढ़ शु. तृतीया	09 आषाढ़ शु. दशमी	16 श्रावण कृ. तृतीया	23 श्रावण कृ. दशमी	30 श्रावण शु. द्वितीया
रवि	03 आषाढ़ शु. चतुर्थी, विनायक चतुर्थी व्रत	10 आषाढ़ शु. एकादशी, देवशयनी एकादशी व्रत	17 श्रावण कृ. चतुर्थी	24 श्रावण कृ. एकादशी, कामिका एकादशी व्रत	31 श्रावण शु. तृतीया, हरियाली तीज

कृ. - कृष्ण शु. - शुक्ल

गुप्त नवरात्रि की उपादेयता

नवदुर्गा उत्सव और नवरात्रि पर्व -
हिन्दू धर्म शास्त्रों के अनुसार वर्ष में चार बार नवदुर्गा या नवरात्रि का आगमन क्रमशः - **माघ, चैत्र, आषाढ़, आश्विन** में होता है। **चैत्र मास की नवरात्रि को बसंतोत्सव नवरात्रि अथवा बड़ी नवरात्रि कहा जाता है, आश्विन मास की नवरात्रि छोटी नवरात्रि कहलाती है । तथा शेष दो आषाढ़ और माघ की नवरात्रियाँ गुप्त नवरात्रि कहलाती है ।**

साधना का पर्व है गुप्त नवरात्रि -
स्वयं शक्ति - माया सृजित इस समूचे चराचर अखिल विश्व की पालनहार और कण कण की अधिष्ठात्री देवी है माँ आदिशक्ति भवानी। वह स्वयं ही ज्ञान - प्रदायिनी, विमल बुद्धिदात्री माँ शारदा भी है, तो कभी असुर संहारक, रौद्र रूपधारिणी काली भी। ठीक इसी प्रकार वह शक्ति कभी **चैत्र कालीन नवदुर्गा उत्सव में माँ पार्वती के रूप में नवदुर्गा स्वरूप में विराजमान है तो कहीं आषाढ़ और माघ की नवरात्रि में दस महाविद्याओं के रूप में विराजमान हैं जिसे गुप्त नवरात्रि कहते हैं।**

सामान्यतः हम देखें तो पायेंगे कि नवदुर्गा उत्सव और नवरात्रि पर्व में बहुत कुछ असमानता के बावजूद भी एक स्तर पर समानता भी मिल जाती है बस स्वरूप बदल जाते हैं। नवदुर्गा का उत्सव भक्तों, श्रद्धालुओं, उपासकों का उत्सव है जिसमें वे माता जगत जननी से आत्मकल्याण और जनकल्याण की कामना करते हैं अर्थात यह सांसारिक जीवन का उत्सव है तथा दूसरी तरफ गुप्त नवरात्रि वैरागियों का साधकों का, तांत्रिकों का पर्व है सांसारिक लोग प्रसिद्धि चाहते हैं वहीं दूसरी ओर तांत्रिक साधक सिद्धि चाहते हैं। नवदुर्गाओं में लोग सात्विकता पर बल देते हैं नृत्य करते हैं, भजन गाते हैं, उपवास करते हैं जबकि गुप्त नवरात्रि के साधक कठोर से कठोर नियम का अवलंब करते हैं। नवदुर्गा उपासकों के लिए देवी पार्वती स्वरूप है तो नवरात्र साधकों के लिए काली का स्वरूप है। नवरात्र उपासकों के लिए प्रत्यक्ष सांसारिक उन्नति देने वाली है तो गुप्त नवरात्रि अप्रत्यक्ष आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर करती हैं इसमें जीवन से मुक्ति और मोक्ष की कामना है।

फलतः यह कहा जा सकता है कि जिस प्रकार नदियों की धारा भिन्न-भिन्न मार्गों से प्रवाहित होती हुई अंततः सागर में मिल जाती हैं ठीक उसी प्रकार साधक हो या उपासक हो अगर सच्चे मन से जगत जननी की सेवा करता है तो उसे सहज रूप में ही सिद्धियां भी मिल जाती हैं, प्रसिद्धियाँ भी मिल जाती हैं। माँ की कृपा इन विशेष अवसरों पर विशेष रूप से प्राप्त होती है फलस्वरूप **मनुष्य के इहलौकिक और पारलौकिक जीवन दोनों ही सफल हो जाते हैं।**

- डॉ. किशोर कुमार जी

अगर आप अपने

‘शब्दों के मोती’

भारतीय परम्परा की माला में पिरोना

चाहते है तो हमे सम्पर्क करें!

आपका लेख वेबसाइट

पर भी प्रकाशित किया जायेगा

paramparabhartiya@gmail.com

जगन्नाथ रथ यात्रा

उत्कल प्रदेश के प्रधान देवता श्री जगन्नाथ जी की रथयात्रा आषाढ़ शुक्ल पक्ष द्वितीया को जगन्नाथपुरी में आरम्भ होती है और शुक्ल पक्ष की एकादशी को रथयात्रा का समापन होता है। **पुरी पूर्वी भारत के उड़ीसा (ओडिशा) प्रान्त में है जिसे पुरुषोत्तम पुरी, शंख क्षेत्र, श्रीक्षेत्र, शाक क्षेत्र, नीलांचल, नीलगिरि के नाम से भी जाना जाता है।** जो प्रभु श्री जगन्नाथ जी की मुख्य लीला-भूमि है। श्री जगन्नाथ जी पूर्ण परात्पर भगवान है और श्रीकृष्ण उनकी कला का ही एक रूप माने जाते है इसलिए पुरी स्थित जगन्नाथ जी का मंदिर भगवान विष्णु के कृष्ण अवतार को समर्पित है। वैष्णव धर्म के अनुसार श्री जगन्नाथ जी राधा रानी और श्रीकृष्ण की युगल मूर्ति के प्रतीक है| रथयात्रा में भगवान विष्णु के दशावतारों की पूजा होती है।

शास्त्रों के अनुसार रथ यात्रा की शुरुआत बहन सुभद्रा के द्वारिका नगर भ्रमण की इच्छा पूर्ण करने के उद्देश्य से हुई थी। तब बहन सुभद्रा, श्री कृष्ण व बलराम तीनो अलग - अलग रथों में बैठकर अपनी मौसी के घर जनकपुर गए थे| तब से आज तक प्रति वर्ष भगवान जगन्नाथ अपने बड़े भाई बलराम और छोटी बहन सुभद्रा के साथ हर साल अपनी मौसी के घर जाते हैं। आज भी तीनों की मूर्तियों को पुरी के जगन्नाथ मंदिर से रथ पर सवार करके उनकी मौसी के घर यानी गुंडीचा मंदिर ले जाया जाता है।

रथ की विशेषता -

- कहा जाता है कि भगवान जगन्नाथ जी की रथयात्रा का पुण्य सौ यज्ञों के समान होता है। रथयात्रा एक ऐसा पर्व है जिसमें भगवान जगन्नाथ अपने भक्तों के बीच आते हैं और उनके दु:ख-सुख में सहभागी होते हैं।

- भगवान जगन्नाथ रथयात्रा के लिए हर साल 3 रथ बनाए जाते हैं, जिनकी तैयारी बसंतपंचमी से शुरू हो जाती है। **तीनों रथ नारियल और नीम की पवित्र एवं परिपक्व काष्ठ (लकड़ियों) से तैयार किये जाते हैं, जिसे 'दारु' कहते हैं।** रथ बनाने में सिर्फ लकड़ियाँ ही इस्तेमाल की जाती हैं, कोई धातु जैसे कील (लोहा) आदि नहीं लगाई जाती है। रथ बनाने वाले सेवक को **"गरबाड़ू"** कहा जाता है।

- तीनों रथों में पहिये से लेकर शिखर के ध्वजदंड तक 34 अलग - अलग हिस्से होते हैं। रथों के निर्माण में तक़रीबन हजारों क्यूबिक फीट लकड़ियों का इस्तेमाल होता है। यह लकड़ी नयागढ़, खुर्दा, बौध इलाके के वनों से हजारों पेड़ों को काटकर लायी जाती है। इसके लिए इससे दोगुने पौधे भी लगाए जाते हैं।

- जब तीनों रथ तैयार हो जाते हैं, तब **"छर पहनरा"** नामक एक अनुष्ठान किया जाता है। जिसमे पुरी के गजपति राजा पालकी में यहाँ आते हैं और इन तीनों रथों की विधिवत पूजा करते हैं। **"सोने की झाड़ू"** से रथ मण्डप और रास्ते को साफ़ करते हैं।

- रथयात्रा में भगवान जगन्नाथ, उनके बड़े भाई बलराम और छोटी बहन सुभद्रा तीनों अलग-अलग रथों पर सवार होते हैं। जिसमे सबसे **आगे बलराम का रथ "ताल ध्वज" जिसका रंग लाल और हरा होता है, फिर बहन सुभद्रा का रथ "दर्पदलन" या "पद्म ध्वज" जो काले या नीले और लाल रंग का होता है और सबसे पीछे भगवान जगन्नाथ का रथ "नन्दीघोष" या "गरुड़ध्वज" चलता है। जिसका रंग लाल और पीला होता है। रथों को उनके रंग और ऊँचाई से आसानी से पहचाना जा सकता है।**

- भगवान जगन्नाथ का नन्दीघोष रथ तकरीबन 45.6 से 65 फीट ऊंचा और चौड़ा होता है, जिसमें 7 फीट व्यास के 18 पहिये होते है, बलराम का तालध्वज रथ और देवी सुभद्रा का दर्पदलन रथ नन्दी घोष से छोटा होता है, जिसमे 16 और 14 पहिये लगे होते है।

- आषाढ़ माह की शुक्लपक्ष की द्वितीया तिथि को रथयात्रा आरम्भ होती है। ढोल, नगाड़ों, तुरही, शंखध्वनि और जयनाद के बीच भक्तगण इन रथों को रस्सी से खींचते हैं। माना जाता हैं कि रथ खींचने वाले महाभाग्यवान होते है और जीवन मरण के चक्र से मुक्ति मिल जाती एवं उनको मोक्ष की प्राप्ति होती है।

- भगवान जगन्नाथ के लिए पूरी के जगन्नाथ मंदिर में 752 चूल्हों पर प्रसाद बनाया जाता है। इसलिए यह दुनिया की सबसे बड़ी रसोई का रूप है। रथयात्रा के नौ दिनो तक के उत्सव में यहाँ के चूल्हे जलाये नही जाते हैं तब सारा भोग गुंडिचा मंदिर में बनाया जाता है। वहाँ भी पुरी मंदिर के समान 752 चूल्हों की ही रसोई है।

- भगवान जगन्नाथपुरी का यह लोकप्रिय रथयात्रा उत्सव जगन्नाथपुरी के अलावा भारत के कुछ प्रांतो जैसे - गुजरात, असम, जम्मू, दिल्ली, आंध्र प्रदेश, अमृतसर, भोपाल, बनारस और लखनऊ में भी मनाया जाने लगा है। इसके अलावा बांग्लादेश, सैन फ्रांसिस्को और लंदन आदि देशों में भी रथयात्रा निकाली जाने लगी है।

WHITE BERRY
RESIDENCY
90%
WORK
COMPLETED
AND WORK GOING ON IN FULL SWING.
Possession
December 2022
Book Now
98705 80810
85913 69996
Google Location
QR Code:
MAHA RERA No. P51800027240
@ Thakur Complex, Kandivali (E)
www.whiteberryresidency.com

GAATHBANDHAN
Kings weds Queens
www.kingswedsqueens.com
HER
and
HIM
Sample Text Sample Text
Wedding
+91 7303021123
PAPER - LESS
&
SHIPPING - FREE
WEDDING
INVITATION
Call Us

भारतीय परम्परा
की मासिक ई-पत्रिका
नियमित प्राप्त करने हेतु हमें सम्पर्क करें!

- व्हाट्सप्प और टेलीग्राम पर से हर महीने के शुरू में नया अंक प्रेषित किया जाता है। यदि किसी कारणवश आपको नया अंक नहीं मिला हो तो कृपया हमें सूचित करें।

- भारतीय परम्परा ई-पत्रिका के लिए दिए गए नंबर 7303021123 को मोबाइल में सेव करें और व्हाट्सप्प एवं टेलीग्राम के ग्रुप से जुड़े।

- ई-पत्रिका में जहाँ कहीं भी सोशल मीडिया के आइकॉन बने हुए है उन्हें स्पर्श करने पर आप उस लिंक पर इंटरनेट के माध्यम से पहुँच सकते है।

- ई-पत्रिका में कुछ त्रुटियाँ हो तो हमें जरूर बताये और आपको पत्रिका पसंद आये तो अपने परिवारजनों और मित्रों के साथ शेयर करें।

- **भारतीय परंपराओं** को संजोये रखने एवं ई-पत्रिका को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपके सुझावों और विचारों से अवगत जरूर कराये।

मानव जीवन - दुर्लभ?

भगवान विष्णु मनुष्य जीवन 43 लाख 20 हजार वर्षो के बाद में मिलता है। यानि कि 84 लाख योनियां घूमने के बाद यह प्रसाद प्राप्त होता है। यह देव दुर्लभ शरीर सिर्फ आत्मा का जन्म- मरण मिटाने के लिए परमात्मा ने आत्म कल्याण हेतु बनाया है।

इसके लिए परमात्मा ने 2 पद बनाए हैं -

1. होण काल

2. परब्रह्म

- होण काल - जन्म और मरण, यहीं पर सब अवतार एवं आत्मा होती है। जब तक यहाँ तक के जो साधन करते हैं तब तक आत्मा जन्म और मरण में आती है। इसमें स्वर्ग - बैकुंठ - परब्रह्म तक जन्म और मरण है।

- परब्रह्म - इसके आगे परमात्मा ने एक सतलोक (निर्वाण पद) - केवल पद बनाया है, उसके लिए परमात्मा पूर्ण सतगुरु को अपना रूप देकर भेजते है। उनके द्वारा सतलोक से सत, नेह:अक्षर जिस आत्मा को प्राप्त होता है उस आत्मा के 6 पूर्व व 6 पश्चिम के कवँल (चक्र) खुलते है जो दसवें दरवाजे को खोलकर परम धाम जाती है। जिससे उस आत्मा का जन्म मरण मिट जाता है। और अंत में वह आत्मा परमधाम की यात्रा करती है।

वर्तमान में सतगुरु - संत सुखराम जी महाराज है जिनको "ग्रंथ" की पदवी है। इनके बाद कोई सतगुरु नहीं आये। जैसे भगवान कृष्ण जगत की रक्षा का औदा है और इनके बाद कोई निमित्त अवतार नहीं हुआ।

इसी विश्वास के साथ केवल्य ज्ञान को प्राप्त करने के लिए एक सरल विधि को सीखना होगा। इस विधि में **परब्रह्म पिता को नमन करके उनका नाम "राम" नाम को कागल्या - जीभ के साथ श्वांस एवं प्रश्वांस में करना होता**

है। इस प्रक्रिया को बड़ी आसानी से 5 से 10 मिनिट में सीखा जा सकता है।

मनुष्य जीवन की रजिस्ट्री -

इस विधि को सीखकर निरंतर अभ्यास करते रहने से सत शब्द की प्राप्ति हो जाती है। जिससे आत्मा का ऋण - कर्म बाकि है तो उसको ख़त्म करने के लिए आत्मा तब तक जन्म लेती है। जो कि मनुष्य जीवन में ही आएगी और अच्छे कुल (परिवार) में उसका जन्म होगा। और ऋण कर्म शेष नहीं रहता है तो आत्मा परमधाम चली जाती है, जहां पर से जीवन और मरण का चक्र समाप्त हो जाता है।

आप विधि सीखना चाहते है या ग्रंथ लेना है तो नीचे दिए गए नंबर और पते पर संपर्क कर सकते है -
जगदीश प्रसाद जागेटिया
गली नंबर 5, प्रताप नगर, ब्यावर - 305901, राजस्थान
फ़ोन - +91 82332 07830

यहां पर रोजाना 8:30 से 9:15 तक सत्संग होती है। विधि सीखना हो तो उपरोक्त पते पर या नंबर पर सम्पर्क करें। सत्संग के लिए ऑनलाइन भी जुड़ सकते है। जीवन में एक बार इस ज्ञान को जरूर समझे और अपना एवं अपनों का कल्याण करें। इसके लिए आपको कोई राशि खर्च नहीं करनी होती है।

- जगदीश प्रसाद जागेटिया जी

....

जीवन एक संसार

मुस्कुराना
सीखिये,
रोना तो
जिन्दगी
पैदा होते ही
सिखा देती है।

थोडा सा बचपन
साथ रखियेगा
जिन्दगी की शाम में ...
उम्र महसूस ही न होगी,
सफर के आखरी
मुकाम में !!!

'वक्त'
कहता है मैं फिर न आयूँगा
जीना है तो इस पल को
जी लो क्योंकि,
अगले पल तक रोक
न पायूँगा इसको

स्वयं का दर्द
महसूस होना जीवित
होने का प्रमाण है,
औरों का दर्द
महसूस होना इंसान
होने का प्रमाण है,

इस दुनिया में चप्पल से
बडा कोई जोड़ा नही है...
यदि एक खो जाए तो
दूसरे का जीवन भी
खत्म हो जाता है..!!

मौन
रहना एक साधना है,
और
सोच समझ कर बोलना
एक कला है..!!

लघुकथा – मां अभी जिंदा है

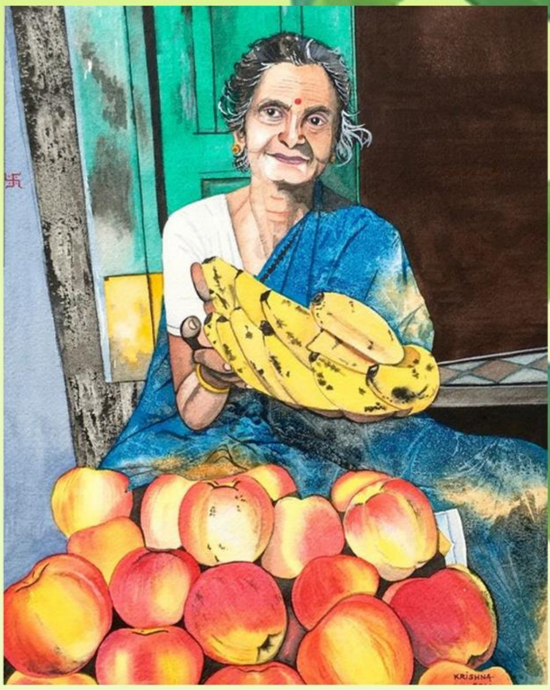

छोटा बेटा कर्तव्य, अपनी बयासी साल की वृद्ध माँ की सेवा को ही अपना धर्म समझता था।
"मातृदेवो भव:।" यही उसका जीवन मंत्र था।

बड़ा बेटा भाविक अपने परिवार समेत पास की सोसाइटी में ही रहता था। माँ रोज़ अपने बेटे-बहू और बच्चों को याद किया करती। आख़िर माँ जो है। लेकिन उनके चेहरों को देखना माँ के नसीब में.....।

आज भाविक चार-धाम की यात्रा करके माँ से मिलने आया है। माँ बोली बेटे, रोज़ तुम्हें, बहू और बच्चों को याद किया करती हूँ। आज लगभग दो महीने बाद तुम्हारा चेहरा देखने को मिला। अब मेरे शरीर का कोई भरोसा नहीं। न जाने ईश्वर का कब बुलावा आ जाए!"

इतना बोलकर माँ गहरी नींद में सो गई और खर्राटे लेने लगी।

भाविक- "कर्तव्य, आज़ ब्रह्म-भोजन है। क्या तुम्हारे यहाँ न्योता आया है? जमींदार बादल सिंह आज अपने पितरों के पीछे ब्रह्म-भोजन करवा रहे हैं। हमारी पूरी बिरादरी को न्योता दिया है।

कर्तव्य- हाँ, कल एक लड़का निमंत्रण-पत्र दे गया है।

भाविक- "माँ के जाने के बाद हमें भी पूरी बिरादरी को भोजन करवाना होगा। लोग बातें करेंगे कि पाँचो लड़के इतना कमाते हैं, फिर भी माँ के पीछे ब्रह्म - भोजन नहीं करवाया।"

कर्तव्य मन ही मन- "माँ के जीते जी उनके पीछे ब्रह्म-भोजन करवाने की बात कहाँ तक उचित है? भगवान से यही प्रार्थना करता हूँ कि माँ सौ वर्ष की आयु पूरी करें और बड़ी धूमधाम से उनका जन्म-शताब्दी महोत्सव मनाऊं।"

भाविक- "कर्तव्य, किस सोच में पड़ गए?"

बड़े भाई भाविक की माँ के प्रति भावशून्यता और संवेदनहीनता को देखकर कर्तव्य को बड़ा आघात पहुँचा। अपने आंसुओं को रोक लिया और इतना ही बोल पाया - **"भैया, माँ अभी जिंदा है।"**

- समीर उपाध्याय 'ललित' जी

लघुकथा – सावन की सौगात

"अरी ओ रत्ना, आसमान में बादल देखो कैसे बरसने को बेताब हो रहे है, अबकी तुम्हारे कानों के झुमके घड़वा दूंगा, तुम भी चलना सूनार के और अपनी पसंद से ही बनवा लेना। शामा के बापू मेघ लगते ही तुम्हारे सपनों को पंख लग जाते हैं कहते हुए रत्ना खिलखिलाने लगी।"

दोनों चारपाई पर बैठे आसमान को एकटक निहार रहे थे तभी रत्ना की नजर शंकर के पैरों पर पड़ी खेत में हल चलाने के दौरान अधिक चलने से पैरों में फफोले आ गये थे जिन्हें देखकर उसकी आँखों से बरबस ही आंसू बहने लगे। कंधों पर नमी पाकर शंकर घबराया सा कहने लगा रत्ना दिल छोटा न करो, अबकी देखना बरखा जरूर होगी हमारे खेत में फसल लहराती नजर आयेगी और फिर तुम्हारे बरसों के अरमान पूरे कर दूंगा तुम्हें माताजी के दर्शन करने की इच्छा है न वहाँ भी ले चलूँगा। अश्रुपूरित नेत्रों से रत्ना शंकर से लिपट गई, वह असमंजस में घिरा कुछ न समझ पाया।

रत्ना रातदिन इन्द्र देव को प्रसन्न करने में लग गई।

जेठ की तपती गर्मी हो अथवा जाड़े का मौसम शंकर सुबह से ही खेत की तरफ निकल जाता। परिवार के भरण पोषण की व्यवस्था में खटते रहता। समझदार रत्ना पति की पीड़ा को समझने में सक्षम थी उसने एक- एक कर ब्याह के सारे गहने गिरवी रख दिए थे उसके मन में उन गहनों की विशेष आसक्ति नहीं थी।

शंकर का प्रेम ही उसका सर्वोत्तम गहना था। दूसरे दिन सवेरे जल्दी ही वह भोलेनाथ के दरबार में अभिषेक करने पहुँच गई। जलाभिषेक करते हुए उसके अश्कों के मोती भी शिवजी पर चढ़ते गए पति प्रेम में इतना समर्पित भाव और उत्कंठा देखकर शायद शिवजी भी प्रसन्न हुए।

रत्ना घर पहुँची ही थी की बिजली सी कौंधी और धुआंधार बारिश ने तपती धरा को तृप्त कर दिया। शंकर खेत में बुआई करने निकल रहा था तो रत्ना भी साथ हो ली दोनों हंसते मुस्कुराते प्रेम गीत गाते हुए अपने सपनों को हकीकत में पाने की लालसा लिए आगे बढ़ रहे थे। रत्ना ने कभी पति पर दोषारोपण नहीं किया। घर का संतोषी, प्रसन्न वातावरण समृद्धि लाने में सहायक हुआ और देखते ही देखते खेत में मोतियों के दाने नजर आने लगे।

रत्ना ने अपने देवर से कह रखा था शहर जाये तब ट्रैक्टर की कीमत के बारे में पता कर आना। बरसों बाद अबकी फसल की उपज बहुत अच्छी रही। आज की रात शंकर की खुशियाँ आसमान छू रही थी उसने अपने मजबूत बाहुपाश का हार बनाकर रत्ना को पहना दिया खिड़की से झांक रहा शशि भी इस दंपत्ति का प्रेमालाप देख मुस्कुराने लगा।

सूर्योदय कब हुआ पता ही नहीं चला दोनों शहर की और निकल पड़े एक दूसरे के अरमानों को पूरा करने। रत्ना जिद पर अड़ गई वह शंकर के लिए ट्रैक्टर लेना चाह रही थी, और शंकर उसके लिए गहने घड़वाने बेताब हो रहा था।

रत्ना कहने लगी "शामा के बापू सर सलामत तो पगड़ी हजार तुम स्वस्थ रहोगे तभी परिवार ख़ुश रह पायेगा। इन्द्र देव अगले बरस फिर प्रसन्न होंगे तब बनवा दीजिएगा गहने।"

अपने ट्रैक्टर पर बैठ सावन की रिमझिम फुहार का आनंद लेते हुए दोनों गाँव की ओर निकल पड़े आस पास के पेड़ पौधे भी खिलखिला रहे थे।

- राजश्री राठी जी

"खुशियों को गले लगाना सीखो"

खुशियों को गले लगाना सीखो,
दीनों को अपना बनाना सीखो!
कबीर के ढाई आखर फिरते,
सबके दिलों पर दस्तक देते,
अपनेपन की तलाश में रहते,
अनसुनो को सुनाना सीखो!
खुशियों को गले लगाना सीखो,
दीनों को अपना बनाना सीखो!
हर राह, हर मोड़ पर मिल जाते,
उदास चेहरे, पिचकती आंतें,
भूखे पेट उम्मीद भरी आँखें,
उदास आँखों को हंसाना सीखो!
खुशियों को गले लगाना सीखो,
दीनों को अपना बनाना सीखो!
धरती जिनका हैं घर-बिछौना,
चादर जिनकी नीला आसमान,
भीख मांगकर जो गुजारा करें
उनको दाना-पानी देना सीखो!
खुशियों को गले लगाना सीखो,
दीनों को अपना बनाना सीखो!

- उषा माहेश्वरी पुंगलिया जी

देवशयनी एकादशी का महत्व

आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को **देवशयनी हरिशयनी या पद्मा एकादशी** कहा जाता है। हिंदू मान्यता के अनुसार 4 महीनों के लिए भगवान श्री विष्णु निद्रा में रहते हैं। जिसे **"हरिशयन काल"** कहते हैं। इन 4 महीनों में विवाह आदि जैसे कोई भी शुभ कार्य नहीं किए जाते हैं। इसके बाद कार्तिक मास में शुक्ल पक्ष की एकादशी जिसे देवउठनी या हरि प्रबोधिनी एकादशी भी कहा जाता है, इस दिन भगवान विष्णु की योग निद्रा पूर्ण होती है तथा इसी दिन से मांगलिक कार्यों का आरंभ होता है। प्राचीन काल में साधु संन्यासी इन 4 महीनों में कहीं भी यात्रा नहीं करते थे। जहाँ पर रहते थे वहीं पर 4 महीने रहकर भगवान का भजन कीर्तन यज्ञ आदि धार्मिक क्रियाओं को संपन्न किया करते थे। इसलिए चतुर्मास को धार्मिक कार्यों और साधना के लिए अति उत्तम माना जाता है। लेकिन सांसारिक कार्यों के लिए यह समय उचित नहीं माना जाता है। क्योंकि धार्मिक मान्यता यह है कि इस समय शादी, मुंडन, जनेऊ जैसे सांसारिक कार्यों को करने से भगवान का आशीर्वाद नहीं मिल पाता है। यह समय संयमित भाव से रहने का है। व्यावहारिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो इन 4 महीनों में वर्षा के कारण जलभराव रहता है ऐसे में किसी भी धार्मिक एवं मांगलिक कार्यों के आयोजन में वर्षा के कारण संकट उत्पन्न हो सकता है इसीलिए इन 4 महीनों में इस प्रकार के आयोजन को टालना ही उचित होता है।

ऐसा माना जाता है कि चतुर्मास लग जाने पर धरती पर मौजूद सभी तीर्थ व्रज भूमि में आकर श्री कृष्ण की सेवा करते हैं इसलिए चतुर्मास के दौरान सभी तीर्थों का पुण्य एक मात्र व्रज की यात्रा और दर्शन से मिल जाता है। इसलिए इस दौरान तीर्थयात्रा करना चाहते हैं तो व्रज भूमि की यात्रा को सर्वोत्तम है।

देवशयनी एकादशी की कथा -

श्री कृष्ण बोले हे युधिष्ठिर! यह एकादशी आषाढ़ शुक्ल **देव शयनी एकादशी या पदमा एकादशी** के नाम से विख्यात है इसकी कथा ब्रह्माजी ने नारदजी से कही थी वही मैं तुम्हें कहता हूँ। इस एकादशी का व्रत करने से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं जो व्यक्ति इस व्रत को नहीं करते वह नर्क गामी होते

हैं इस व्रत के करने से भगवान विष्णु प्रसन्न होते हैं। अतः अब तुम इसकी पौराणिक कथा सुनो, सतयुग में सूर्यवंश में मांधाता नाम का एक चक्रवर्ती राजा था। वह सत्यवादी और महान प्रतापी था। अपनी प्रजा का पुत्र की तरह पालन करता था उसके राज्य में प्रजा धन-धान्य से भरपूर और सुखी थी। प्रजा धर्म परायण एवं शांति से रहती थी । राज्य में कभी अकाल नहीं पड़ा था परंतु एक बार 3 वर्ष तक वर्षा नहीं हुई। परिणाम स्वरूप अकाल पड़ गया। प्रजा अन्न की कमी के कारण दुखी हो गई अन्न न होने से यज्ञ आदि भी नहीं हो पाए। दुखी प्रजा राजा के पास पहुंची, राजा से कहा हे राजन! अन्न सारे संसार की समृद्धि का आधार है, जो वर्षा से प्राप्त होता है। वर्षा के ना होने से राज्य में अकाल पड़ा है।

सारी प्रजा त्राहि-त्राहि पुकार रही है इसलिए आप कृपा करके कोई ऐसा उपाय कीजिए जिससे हमारा कष्ट दूर हो जाए। राजा मांधाता कहने लगे मैं कुछ प्रयत्न अवश्य करूंगा। इतना कहकर राजा कुछ सेना को साथ लेकर वन की तरफ चल पड़े व विभिन्न आश्रमों का भ्रमण करते हुए ब्रह्मा जी के पुत्र अंगिरा ऋषि के आश्रम में पहुंचे। राजा ने घोड़े से उतरकर अंगिरा ऋषि को प्रणाम किया मुनि ने राजा को आशीर्वाद देकर कुशल क्षेम एवं आश्रम में आने का कारण पूछा। राजा ने हाथ जोड़कर विनती भाव से कहा कि भगवन !सब प्रकार से धर्म का पालन करने पर भी मेरे राज्य में अकाल पड़ रहा है। इससे प्रजा अत्यंत दुखी है राजा के पापों के प्रभाव से ही प्रजा को कष्ट मिलता है। ऐसा शास्त्रों में लिखा है जब कि मैं धर्म अनुसार राज्य करता हूँ। तो मेरे राज्य में अकाल क्यों पड़ा इसका कारण मुझे ज्ञात नहीं हुआ कृपया मुझे अकाल का कारण बताएं मेरा संदेह दूर करें। साथ ही प्रजा के कष्ट को भी दूर करने का उपाय करें।

राजा की प्रार्थना सुनकर ऋषि कहने लगे हैं राजन! यह सतयुग है सब लोगों में उत्तम योग है इसमें धर्म चारों चरण सहित सुरक्षित हैं अर्थात इस युग में धर्म का पूरी तरह पालन होता है। राजन! आपके राज्य में जिस व्यक्ति को जो कार्य सौंपा गया है वह वही काम करता है अथवा नहीं इसे जानने का प्रयत्न करें! ब्राह्मणों को वेद पढ़ने तथा तप करने का अधिकार है परंतु आपके राज्य में जिसे तप का अधिकार नहीं है वह तप करने का प्रयत्न कर रहा है इसी दोष के कारण आपके राज्य में वर्षा नहीं हो रही है। इसलिए यदि आप प्रजा का भला करना चाहते हैं तो उस व्यक्ति को जो अपने अधिकार का कार्य छोड़कर दूसरे के अधिकार क्षेत्र में कार्य करने की भूल कर रहा है उसे रोकें। इस प्रकार का उपाय सुनकर राजा कहने लगे कि महाराज मैं अपनी प्रजा के लोगों को अपना धर्म पालन की सलाह अवश्य दूंगा, परंतु मैं उस शूद्र को तपस्या करने से कैसे रोक सकता हूँ।

किसी महत्वकांक्षी को अपनी उन्नति करने से नहीं रोकूंगा यदि इसके अतिरिक्त भी कोई उपाय है तो कृपया बताइए। ऋषि कहने लगे हैं राजन! यदि तुम अन्य उपाय जानना चाहते हो तो सुनो आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष के देवशयनी पदमा एकादशी को विधिपूर्वक व्रत करो। व्रत के प्रभाव से तुम्हारे राज्य में वर्षा होगी और प्रजा सुखी होगी। देव शयनी एकादशी का व्रत सब सिद्धियों को देने वाला तथा समस्त द्रवों को नाश करने वाला है। इस एकादशी का व्रत तुम प्रजा सहित करो। मुनि के इस वचन को सुनकर राजा अपने नगर में आए उसने विधि पूर्वक देवशयनी एकादशी का व्रत किया। इस व्रत के प्रभाव से वर्षा हुई एवं प्रजा सुखी हो गई देव शयनी एकादशी का व्रत इस लोक में संपन्न हो और

परलोक में मोक्ष देने वाला है यह कथा भविष्य उत्तर पुराण में वर्णित है।

पूजन विधि -

- इस दिन प्रातः काल जल्दी उठकर भगवान विष्णु के स्मरण से दिन प्रारंभ करें।
- स्नान के पश्चात भगवान विष्णु की पूजा करें।
- पूजा पूरे विधि विधान से करें ताकि चार महीने तक भगवान विष्णु की कृपा बनी रहे।
- पूजन के स्थान की शुद्धि के बाद वहाँ श्री हरी की मूर्ति या चित्र रखें।
- दीप जलाएं। भगवान विष्णु को तुलसी अत्यधिक प्रिय है अतः उन्हें तुलसी दल भेंट करें तथा पीली वस्तुओं का भोग लगाएं।
- पीला वस्त्र अर्पित करें एवं भगवान विष्णु के मंत्रों का जाप करें।
- हरि का नाम अपने आप में एक मंत्र है जिससे सभी मंत्रों के जाप का फल प्राप्त होता है। इसके पश्चात तुलसी या चंदन की माला अर्पित कर आरती करें।

देवशयनी एकादशी संकल्प मंत्र इस प्रकार है :

“सत्यस्थः सत्यसंकल्पः सत्यवित् सत्यदस्तथा।
धर्मो धर्मी च कर्मी च सर्वकर्मविवर्जितः।।
कर्मकर्ता च कर्मैव क्रिया कार्यं तथैव च।
श्रीपतिर्नृपतिः श्रीमान् सर्वस्यपतिरूर्जितः।।"

- रूचि गोस्वामी जी

....

सावन गीत (आल्हा छंद)

कितना मनभावन है सावन,
बाद एक दूजा त्यौहार।
भोले दूर करें तकलीफ़ें,
ख़ुशियाँ झूमे हर घर द्वार।।

धरती पर आया नवयौवन,
हरियाली फैली चहुँओर।
पेड़ों पर झूलों की पीगें,
मन भी लेता संग हिलोर।।

चूड़ी बिंदी पायल झुमके,
कर लें हम सोलह श्रृंगार।
सजा रहे सिंदूर माँग में,
मंगलसूत्र गले का हार।।

तीज मनाएँ सखियों के सँग,
खूब रचे मेंहदी से हाथ।
गौरी पूजें सदा सुहागिन,
सात जनम हो पी का साथ।।

राखी से सजती कलाइयाँ,
धागे में बँधता विश्वास।
हर मुश्किल में मेरी बहना,
भाई होगा तेरे पास।।

सावन रहता एक मास ही,
खिला रहे मन पूरे वर्ष।
हरी भरी हो अपनी वसुधा,
जीवन में आए उत्कर्ष।।

- स्वीटी सिंघल ‘सखी’ जी

आया सावन

सावन आया सावन आया
त्योहारों की बहार लाया, खुशियों की फुहार लाया।
मेहंदी की खुशबू के संग प्रियतम का भी प्यार लाया।।

बारिश की बूंदों से, धरा के लिए सुकून लाया,
मिट्टी की सोंधी खुशबू और हरियाली के रंग भी लाया।।
सावन आया सावन आया खुशियों की फुहार लाया।

शिव भक्तों के लिए भक्ति का भंडार लाया
राखी के बंधन के संग भाई बहन का प्यार लाया।।
सावन आया सावन आया खुशियों की फुहार लाया।

तीज के त्यौहार संग झूले के वो गीत लाया
बहू-बेटियों के लिए सिंजारे की सौगात लाया।।
सावन आया सावन आया खुशियों की फुहार लाया

देखो री सखी, मनभावन यह ऋतु आई
मोर पपीहा नाच रहे कोयल भी है गा रही।
बादल गरज गरज कर बरस रहे,
मन जैसे उमंगों से भर आया।।

सावन आया सावन आया
खुशियां ही खुशियां है लाया।।

- योगिता सदानी जी

गुरू पूर्णिमा

१.
गुरु विहीन
मानव जीवन
ऊर्जा विहीन।।
२
यदि तू नहीं
तो कुछ भी नहीं है
हे गुरुवर!
३.
जीवन नैया
उतारे भव पार
गुरु खिवैया।।
४.
मिटे अज्ञान
हो जाए आत्मज्ञान
गुरु दे ज्ञान।।
५.
कैसे चुकाए
गुरु-ज्ञान का मोल?
है अनमोल।।
६.
निशान मिले
गुरु के चरणों के
मंजिल मिले।।
७.
गुरु-दर्शन
दृष्टि समक्ष हुएं
चारों ही धाम।।

८.
गुरु की दृष्टि
करती बेड़ा पार
पूरा विश्वास।।
९.
शीश झुकाया
गुरु के चरणों में
ईश को पाया।।
१०.
समय तो क्या
भाग्य भी पलट दे!
गुरु की कृपा।।
११.
तिमिर हटा
गुरु से मंत्र मिला
धन्य जो हुआ।।
१२.
ज्ञान कराती
उचित-अनुचित का
गुरु की वाणी।।
१३.
दीपक जले
घोर तिमिर हटे
गुरु जो मिले।।

– **समीर उपाध्याय 'ललित' जी**

गुरू पूर्णिमा का महत्व और गुरू का अर्थ
जानने के लिए आइकन को स्पर्श करें – www.

सार्वजनिक गणेशोत्सव के प्रणेता लोकमान्य तिलक

राष्ट्रवादी, शिक्षक, समाज सुधारक, वकील, **‘पूर्ण स्वराज’** के पैरोकार और भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के प्रथम लोकप्रिय नेता **बाल गंगाधर तिलक को उनके २३ जुलाई को पड़ने वाले १६७ वें जन्म दिन** पर नमन करते हुये आपको याद दिलाना चाहूँगा कि इनको **"लोकमान्य"** की आदरणीय उपाधि प्राप्त होने के कारण हम सभी उन्हें **"लोकमान्य तिलक"** के नाम से भी उल्लेख करते हैं।

आप सभी के ध्यानार्थ बता दूँ कि बाल गंगाधर तिलक ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में नरमपंथी रवैये के विरुद्ध आवाज उठाने वाले **श्री लाला लाजपत राय और श्री बिपिन चन्द्र पाल को समर्थन दिया, जिसके चलते इन तीनों को "लाल-बाल-पाल" के नाम से जाना जाने लगा।** इस कारण से काँग्रेस अनेक सालों तक गरम दल और नरम दल में विभाजित रही।

इनके विषय में जितना भी लिखा जाय कम ही पड़ेगा। इसलिये दो महत्वपूर्ण तथ्य आप सभी के ध्यानार्थ अवश्य प्रस्तुत करना चाहूँगा। **पहला** तो यह है कि काँग्रेस में गरम दल के सदस्य होने के बावजूद इन्हें मरणोपरान्त श्रद्धाञ्जलि देते हुए नरम दल के गांधी जी ने इन्हें आधुनिक भारत का निर्माता बताया तो पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भारतीय क्रान्ति का जनक। **दूसरा** इनके बचपन से जुड़ा एक ऐतिहासिक तथ्य, जिसके अनुसार एक बार कक्षा में कुछ छात्रों ने मूंगफली के छिलके फर्श पर फेंक गन्दगी फैला दी। जिसके चलते कक्षा अध्यापक नाराजगी दर्शाते सभी को पूछा कि यह किसका काम है। लेकिन किसी भी छात्र ने अपनी गलती नहीं मानी। तब अध्यापक ने पूरी कक्षा को ही दंडित करने की घोषणा कर प्रत्येक छात्र के हाथों पर छड़ी से मारने लगे। लेकिन जब बाल गंगाधर तिलक की बारी आई तो उन्होंने हाथ आगे बढ़ाया ही नहीं बल्कि स्पष्ट कह दिया कि जब मैंने मुगफली खाई ही नहीं तो मैं बेंत भी नहीं खाऊंगा। यह सुन अध्यापक महोदय फिर पुछ बैठे कि बताओ यह किसने किया। इसके उत्तर में इन्होनें कह दिया की न तो मैं किसी का नाम बताऊंगा और न ही बेंत खाऊंगा। इसके फलस्वरूप जब अध्यापक महोदय ने इनकी शिकायत प्राचार्य से की तब इनके अभिभावक को स्कूल आना पड़ा और इनको स्कूल से निकाल दिया गया। यह घटना यह दर्शाती है कि ये बचपन से ही कठोर अनुशासन का पालन करते हुये सच्चाई पर अडिग रहते थे साथ ही साथ साथियों की अनुशासनहीनता की कभी चुगली नहीं करते थे, और इसी गुण के चलते ये हमेशा काँग्रेस में सभी के बीच आदरणीय बने रहे।

इन्होनें अपनी मृत्यु के करीबन चार साल पहले अप्रैल 1916 में **'होम रूल लीग'** की स्थापना कर दी थी, जिसका इनकी मृत्यु पश्चात काँग्रेस में विलय हो गया। इस होम रूल आन्दोलन के चलते ही बाल गंगाधर तिलक को काफी प्रसिद्धि मिली क्योंकि उन्होनें इसी को माध्यम बना जनजागृति का कार्यक्रम का श्रीगणेश कर सर्वप्रथम पूर्ण स्वराज की मांग पर पूरा जोर लगा दिया क्योंकि उस समय तक उनके द्वारा माण्डले [बर्मा] जेल में जाने के पहले 1897 में न्यायालय में न्यायाधीश के सामने मराठी भाषा में उनके द्वारा लगाया गया नारा **"स्वराज्य हा माझा जन्मसिद्ध हक्क आहे आणि तो मी मिळवणारच"**, जिसका हिन्दी मे अर्थ है **"स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर ही रहूँगा",** लोकप्रिय हो चुका था यानि यह नारा भारतीय स्वाभिमान और गौरव का प्रेरणास्त्रोत के रूप में उभर चुका था। इन्होनें पूरे भारत के लिए समान लिपि के रूप में देवनागरी की वकालत भी पुरजोर से की थी। इन्हीं सब कारणों से उन्हे सार्वजनिक रूप से **“लोकमान्य” अर्थात "प्रिय नेता"** की उपाधि से सम्मानित किया गया था।

अन्त में आपको बता दूँ कि जनजागृति वाली सोच इनके दिमाग में बहुत पहले से ही थी। यही कारण रहा जिसके चलते **साल 1893 में इसी जनजागृति को स्थायित्व देने के उद्देश्य से इनके प्रयास के कारण महाराष्ट्र में गणेश उत्सव तथा शिवाजी उत्सव सार्वजनिक रूप से सप्ताह भर मनाना प्रारम्भ हुआ**, जो आज इतना लोकप्रिय उत्सव बन, प्रसिद्धि के शिखर पर पूरे देश में जाना जाने लगा है, वह हम सभी बहुत अच्छे से जानते हैं। इस सार्वजनिक रूप से मनाये जाने वाले गणेश उत्सव तथा शिवाजी उत्सव को लोकप्रिय बनाने में इनके स्वामित्व वाले दो समाचार पत्रों का अतुलनीय योगदान रहा था। इन दोनों **मराठा दर्पण [जो अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित होता था] एवं केसरी [जो मराठी भाषा में प्रकाशित होता था] के ये जीवनपर्यन्त सम्पादक भी रहे।** इसके अलावा इनके द्वारा **श्रीमद्भगवद्गीता की व्याख्या को लेकर मांडले जेल में लिखी गयी गीता-रहस्य सर्वोत्कृष्ट कृति** मानी जाती है, जिसका कई भाषाओं में अनुवाद भी हुआ है।

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि इन्होनें अपने सिद्धांतों से किसी भी प्रकार का समझौता किये बिना सदैव पारम्परिक सनातन धर्म का मृत्यु पर्यन्त निर्वहन किया। इसके अलावा एक महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि सनातन धर्म के प्रति प्रगाढ़ आस्था रखते हुये भी इनके व्यक्तित्व में संकीर्णता कभी भी, लेशमात्र भी परिलक्षित नहीं हुई। अतः हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि ये अपने समय के प्रणेता थे। इनके **अद्वितीय देश प्रेम एवं सनातन धर्म के प्रति प्रगाढ़ आस्था के मद्देनजर ही इनको हिंदू राष्ट्रवाद का पिता भी कहा जाता है।**

- गोवर्धन दास बिन्नाणी जी "राजा बाबू"

....

पत्रिका की प्रूफ रीडिंग करने के लिए संगीता जी दरक का धन्यवाद

हंसी-खुशी के पल

थोडी बारिश को मानसून
समझने की गलती न करें..
इन्द्रदेव ने अभी पानी
छिडका है ..

अब हम सबका
डोसा बनेगा !!

बारिश होने की सबसे
ज्यादा खुशी घर के
खिडकी-दरवाजो को
होती है...
खुशी के मारे फूल
जो जाते है !!

लडकी- भैया, यह वाला आम
लंगडा है क्या???

ठेलेवाला - हां बहन जी, तभी
तो ठेले पर बिठाकर घुमा
रहा हूं इसे !!!

अकबर ने बीरबल से तीन नये
सवाल पूछे और कहा कि तीनों
का जवाब एक ही होना चाहिए !
- दूध क्यों उफन जाता है?
- पानी क्यों बह जाता है?
- सब्जी क्यों जल जाती है?
बीरबल - व्हाटसअप चालू
होने की वजह से !!!

मैंने पानी में एक सिक्का डाला
और भगवान से एक प्यारा
सा दोस्त माँगा,
फिर आप मिल गये,
तब आसमान से आवाज आयी
'इतने में इतना ही
मिलता है'

शादी में एक आदमी ने-
गुलाबजामुन लिए और सबको
थोडा-थोडा खाकर प्लेट में रखा।
किसी ने पूछा कि कितना मीठा
है ये चख रहें हो क्या??
आदमी ने बोला - नहीं, ये सब
प्लेट में लुढककर सब्जी
और रायते में घूसेंगे नहीं!!

पारंपरिक व्यंजन- हरियाली पनीर

सामग्री- एक पैकेट ब्रेड, 200 ग्राम पनीर, 150 ग्राम पालक बारीक कटा हुआ, 1 टी-स्पून हरीमिर्च, 1 टी-स्पून कालीमिर्च, 1 टी-स्पून चाट मसाला, नमक स्वाद अनुसार, तलने के लिए तेल।

विधि- ब्रेड के किनारे काटकर उसको पानी में डुबोकर तुरंत निकाल ले। ब्रेड को दोनों हथेलियों से दबाकर पानी निकाल ले। अब इसमें कटे हुए पालक, हरी मिर्ची, चाट मसाला, काली मिर्च और नमक अच्छी तरीके से मिलाएं इस के गोले बना ले। अब पनीर के लंबे टुकड़े काट ले, उसमे थोड़ा सा नमक और चाट मसाला लगा ले। पनीर को ब्रेड के गोलों में स्टफ कर दे। गरम तेल में सुनहरा होने तक तल लें। हरी चटनी के साथ गरमा गरम सर्व करें।
सावन के महीने में जहाँ हरियाली छाई रहती है, सुहाना मौसम रहता है, उसमें यह हरियाली पनीर व्यंजन का आनंद लीजिए।

किचन टिप्स -

१) सूप स्वादिष्ट बनाने के लिए नमक, काली मिर्च का पाउडर और चीनी का प्रयोग करिए। इससे सूप का जायका बढ़ जाता है।
२) सुप गाढ़ा बनाने के लिए कॉर्न फ्लोर या मैदे का इस्तेमाल किया जाता है। इसकी मात्रा कम या अधिक करके हम सुप को गाढ़ा या पतला बना सकते हैं।
३) अगर घर में खट्टा दही है और आप को रायता या छाछ बनाना है तो उसमें कच्चा दूध डालने से खट्टापन कम हो जाएगा और आपका रायता या छाछ स्वादिष्ट बनेगा।
४) दही अधिक मलाईदार और स्वादिष्ट बनाने के लिए उसमें मलाई या क्रीम फेट कर डालें।

होम रेमेडीज -

१) पीलिया होने पर रोगी को पपीते के रस में पताशे मिलाकर पिलाएं।
२) कच्चे बेल के फल से दस्त रोग दूर होता है।
३) सेब का मुरब्बा नियमित खाने से हृदय की दुर्बलता दूर होती है।
४) आम के ताजे हरे पत्तों का अर्क गुनगुना करके कान में डालने से कान का दर्द दूर होता है।

हरियाली अमावस्या

भारत कहिए या आर्यावर्त कहिए संबोधन कुछ भी रहा हो मगर भाव सदा अविरल गंगा की धारा की तरह रहे हैं पूर्ण रूप से स्वच्छंद, पूर्ण रूप से पवित्र ।

स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी की कविता अनायास ही याद आ जाती हैं जब भारत की गौरवमयी महिमा का बखान होता है -

"भारत जमीन का टुकड़ा नहीं, जीता जागता राष्ट्रपुरुष है।
हिमालय मस्तक है, कश्मीर किरीट है, पंजाब और बंगाल दो विशाल कंधे हैं।
पूर्वी और पश्चिमी घाट दो विशाल जंघायें हैं।
कन्याकुमारी इसके चरण हैं, सागर इसके पग पखारता है।
यह चन्दन की भूमि है, अभिनन्दन की भूमि है।
यह तर्पण की भूमि है, यह अर्पण की भूमि है।
इसका कंकर-कंकर शंकर है, इसका बिन्दु-बिन्दु गंगाजल है।
हम जियेंगे तो इसके लिये, मरेंगे तो इसके लिये।"

इस कविता की पंक्तियां ही हमारे पावन पर्व की आधारशिला हैं, उच्च पीठिका हैं जिसे हम सभी एक विशिष्ट नाम से जानते हैं - **हरियाली अमावस्या** ।

यह भारत की ही भूमि हैं जहाँ सभी को समान समझा जाता है जिसमें पेड़ो से लेकर नदियों तक, पहाड़ो से लेकर ग्रहों तक, जीव से लेकर जंतुओं तक, जल से लेकर थल तक और थल से लेकर नभ तक एक समान पूजा का भाव विद्यमान हैं और यह मान्यता है कि इन सभी में परमात्मा ही निवास करता है। इस कथन को सत्य करने के लिए जो पर्व प्रतिनिधित्व करता है उस प्रतीक पर्व का नाम है - **हरियाली अमावस**, जिसे हम सभी श्रावण मास कृष्ण पक्ष की अमावस्या को मनाते हैं।

यह भारतवर्ष ही है जो किसी पर्व, त्यौहार, उत्सवों के आगमन और प्रस्थान में भी समान रूप से अपने आराध्य का आराधक बना रहता है। जैसे पश्चिम दिशा में सूर्यास्त के समय में भी हम पूजा का थाल लिए ईश्वर से कल्याण की कामना करते हैं जिसे हम छठ पूजा कहते हैं ठीक उसी प्रकार जब हम अपनी प्रकृति की उपासना करते हैं, श्रावण मास के आगमन की प्रतीक्षा करते हैं तथा उसके आगमन पर सहर्ष स्वागत करते हैं उसे हम **हरियाली अमावस्या** के नाम से जानते हैं ।

यह पर्व कोई साधारण पर्व नहीं बल्कि विशिष्ट पर्व है, विशिष्ट इसलिए क्योंकि जिस प्रकार सामर्थ्य, शक्ति का परिचायक होता है ठीक उसी प्रकार शक्ति प्रकृति की परिचायक है। इसे यूँ समझिए जो प्रकृति में है, वो शक्ति में है। मान्यता है कि पीपल के वृक्ष में त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु और महेश का निवास है, आंवले में जिस प्रकार लक्ष्मी नारायण का निवास है ठीक उसी प्रकार प्रकृति में ही शक्ति का निवास है।

अतएव जो मनुष्य प्रकृति का उपासक है तो यह तय है कि वह शक्ति का साधक है। प्रकृति माँ है, जनकल्याणी हैं, हम मनुष्य है अबोध बालक हैं, अबोधता में हम कभी कभी प्रकृति का और स्वयं का भी नुकसान कर लेते हैं मगर माँ तो माँ है, अपने बच्चों की अबोधता को भी सहज स्वीकार कर लेती हैं और जरा सा दुलारने पर ही वह अपने आनन्द में अपने बच्चों को समाहित कर लेती हैं। माँ का अपने बच्चों के प्रति अमिट स्नेह और अगाध प्रेम तथा बच्चों के द्वारा अबोधता में की गयी नादानियों के लिए प्रकृति माँ से क्षमा मांगना और पालन हेतु धन्यवाद ज्ञापन करने का ही नाम है **हरियाली मावस या हरियाली अमावस्या**।

मनुस्मृति खुलकर उद्घोषणा करती हैं -

"माता भूमि पुत्रोहं पृथिव्या, उदार चरितानां, वसुधैव कुटुम्बकुम ।।

भूमि मेरी माता है और मैं इसका पुत्र हूँ। उदार चरित्र धारण करने वालों के लिए यह पूरी पृथ्वी ही उनका परिवार है।

यह विशिष्ट धारणा ही इस हरियाली अमावस की अमृत धारा है जो सदैव ईश्वर से हाथ जोड़कर कामना करती है -

'हे ईश्वर मेरे देश के सभी जलाशयों में, कूपों में, तालाबों में सदा गंगा की धारा की तरह जल बना रहे, अरण्यों में, भवनों में, वृक्ष सदा फलों से लदे रहें, उद्यान हो वाटिका हो वानिकी हो यहाँ सदा पुष्प पल्लवित होते रहें, हे ईश्वर हमारी यह भारतीय परंपरा, सनातन विश्वास अमिट और अक्षुण्ण बना रहे।'

इन सभी सौभाग्य मंगल कामनाओं का प्रतीक है हरियाली अमावस्या।

पर्व के दिन क्या करें ??

- पवित्र आचरण धारण करें।
- समुचित दान दक्षिणा दें।
- स्नानादि से निवृत्त होकर पीपल और तुलसी, आंवले इत्यादि वृक्ष का पूजन करें तथा उनकी परिक्रमा करें।
- हल इत्यादि कृषि यंत्रों का पूजन करें।
- पितरों की शांति के लिए पूजा अर्चना करें।

- डॉ. किशोर कुमार जी

भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

भारतीय परम्परा

की मासिक ई-पत्रिका
के पुराने सभी अंकों को
देखने के लिए किताब के
आइकन पर स्पर्श करें !

www.bhartiyaparampara.com

हार्दिक आभार